जो होता है अच्छे के लिये होता है

सदैव ऐसा मानना चाहिए कि जो काम हमारी इच्छा के विरुद्ध हुआ है, वह भगवान द्वारा किया हुआ है और हमारे बहुत भले के लिये है।

एक राजा का वजीर ऐसा ही मानत था। उसके राजा की एक समय उंगली कट गयी। सभी सभासदों ने बहुत शोक प्रकट किया। परंतु उस वजीर ने कहाः "परमेश्वर जो करता है वह भले के लिये होता है।" यह सुनकर राजा बहुत क्रोधित हुआ, और गुप्त रूप से उसने अपने वजीर को मारने की ठान ली।

एक दिन राजा तथा वजीर शिकार के लिये गये। राजा अन्य सभी को दूर छोड़, वजीर के साथ घने जंगलों में चला गया। वहाँ उनको प्यास लगी, राजा ने वजीर को कुंए से पानी खींचने की आज्ञा दी। उसने पानी पिलाया, परंतु जब पुनः वह कुंए से पानी निकालने लगा, तो राजा ने उसे कुंए में धकेल दिया।

राजा वहाँ से चल दिया। सूर्य अस्त हो चुका था, राजा रास्ता भूल गया। वह जंगली आदमियों के गांव के पास एक बड़ के पेड़ से अपने घोड़े को बांध कर विश्राम करने की बात सोचने लगा। उसी समय ढोल बजाते हुए आदमी आये और उन्होंने राजा को पकड़ लिया। उनको देवता पर बली चढ़ाने के लिये एक मनुष्य की आवश्यकता थी। जब राजा की बली चढ़ाने लगे तब उन लोगों के पुरोहित ने कहाः "इसके कपड़े उतार कर प्रत्येक अंग का निरीक्षण करो, कोई अंग खंडित नहीं होना चाहिये।" जब देखा गया तो उसकी उंगली कटी पायी गयी। इसपर पुरोहित ने कहाः "खंडित अंग वाले मनुष्य की बलि देवता पर नहीं चढ़ सकती।" अतः पुरोहित की आज्ञानुसार राजा को छोड़ दिया गया।

इस घटना के पश्चात राजा ने सोचा-विचारा और निश्चय किया कि उस वजीर का मत बहुत ठीक था। मेरी कटी हुई उंगली के कारण ही मेरी रक्षा हो सकी, अन्यथा तो यहाँ से बचना असंभव ही था। अब राजा कुंए के पास गया और वजीर को कुंए से बाहर निकाला। वजीर के बाहर आने पर राजा ने उससे क्षमा मांगते हुए, उसकी बात का पूर्ण समर्थन किया। परंतु साथ ही उसने एक शंका भी वजीर के सामने रखते हुए कहाः "मेरी उंगली कटी इससे मेरी बलि चढ़ने से बच गई। परंतु तुम्हें कुंए में धकेलने से तुम्हारा क्या भला हुआ?" इसपर वजीर ने उत्तर देते हुए कहाः "महाराज! यदि हम दोनों साथ में होते, तो वे लोग आप को तो अंग-भंग होने के कारण छोड़ देते और मेरी बलि चढ़ा देते।" इसीलिये कहा जाता है।

राम ज्यों राखे त्यों रहिये। जो कुछ करे भला कर मानो, कबहुं बुरा न कहिये।।

बोलो हर-हर महादेव